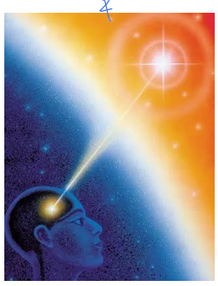
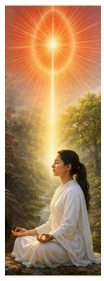


20-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



"मीठे बच्चे - सर्विस के साथ-साथ याद की यात्रा को भी कायम रखना है, इस रूहानी यात्रा में कभी ठण्डे नहीं होना"





प्रश्नः- बच्चों की दिल अगर रूहानी सर्विस में नहीं लगती तो उसका कारण क्या है?



उत्तरः- अगर रूहानी सर्विस में दिल न लगे तो जरूर देह-अभिमान की ग्रहचारी है। चलते-चलते देह अभिमान के कारण जब आपस में रूठ पड़ते हैं तो सर्विस ही छोड़ देते हैं। एक दो की शक्ल देखते ही सर्विस के ख्याल उड़ जाते हैं इसलिए बाबा कहते इस ग्रहचारी से सम्भाल करो।



गीतः- हमारे तीर्थ न्यारे हैं. Click

हमारे तीर्थ न्यारे हैं,
यही धरती के तारे हैं।
हमारे तीर्थ न्यारे हैं,
यही धरती के तारे हैं।

यहाँ पाप मिट जाया करते,
यहाँ मैल मन का धूल जाता।
बड़े-बड़े अन्यायी इनके द्वारे गए उभारे।
हमारे तीर्थ न्यारे हैं,
यही धरती के तारे हैं।

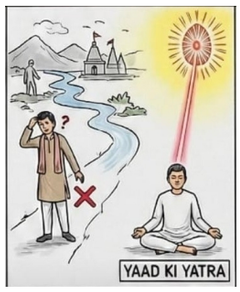
जो भी इनका करता फेरा,
होता उसका दूर अँधेरा।
यही भूमि को स्वर्ग बनाते,
यही सत्य का मार्ग दिखाते।
पाप-पुण्य की यही कसौटी,
सबके यही सुनहरे हैं।
हमारे तीर्थ न्यारे हैं,
यही धरती के तारे हैं।

इन घाटों का, इन नदियों का, निर्मल मंगल नीर,
पुण्य आचमन करके जिसका पावन हुआ शरीर।
गंगा-जमुना-सरस्वती का जल प्रभु के पग धोता है,
गंगा-जल सीमा पे जीवन सफल सभी का होता है।
यही चंद्रभागा का तट है, यह कृष्णा का तीर है,
प्रभु ने अपने हाथों के छापे, करोड़ों लकीर है।
हमारे तीर्थ न्यारे हैं,
यही धरती के तारे हैं।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा



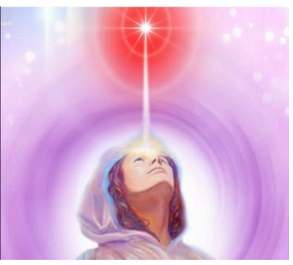
ओम् शान्ति। इस गीत की लाइन ने बच्चों को खबरदार कर दिया। क्या कहा? बुद्धि में यह याद रखना है कि हम तीर्थ यात्रा पर हैं और हमारी यह यात्रा सबसे न्यारी है। इस यात्रा को भूलो मत। यात्रा पर ही सारा मदार है और तो जिस्मानी यात्राओं पर जाकर फिर लौट आते हैं और जन्म-जन्मान्तर यात्रा करते ही आते हैं। हमारे तीर्थ वह नहीं हैं। अमरनाथ



में जाकर फिर मृत्युलोक में चले आना। तुम्हारी वह यात्रा नहीं है और सब मनुष्यों की वह यात्रायें हैं। तीर्थ पर जाकर, चक्र लगाकर फिर आए पतित बन जाते हैं। किसम-किसम की यात्रायें हैं ना। देवी के



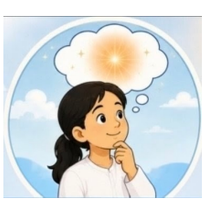
मन्दिर भी अथाह हैं। विकारियों के साथ कितने यात्रा पर जाते हैं। तुम बच्चों ने तो प्रण किया हुआ है निर्विकारी रहने का। तुम निर्विकारियों की यह यात्रा



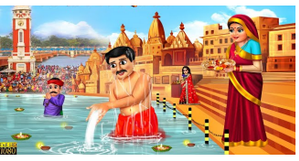
है। **निर्विकारी बाप जो एवर-प्योर है**, उनको याद करना है। पानी के सागर को विकारी वा निर्विकारी



नहीं कहेंगे। और न उनसे निकली हुई गंगायें ही निर्विकारी बनायेंगी। मनुष्य मात्र इतने तो पतित बन पड़े हैं, कुछ भी समझते ही नहीं। वह जिस्मानी यात्रायें हैं- अल्पकाल क्षणभंगुर की यात्रायें। यह यात्रा बड़ी है। **तुम बच्चों को उठते बैठते यात्रा का**





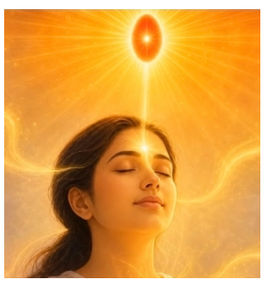


ख्याल रखना है। यात्रा पर जाते हैं तो धन्धाधोरी गृहस्थ व्यवहार आदि सब भूलना होता है। अमरनाथ की जय... बस ऐसे कहते जाते हैं। मास दो मास तीर्थ यात्रा कर फिर आकर गंद में पडते हैं। फिर जाते हैं गंगा स्नान करने। उनको यह पता ही नहीं है कि हम रोज़ पतित होते हैं। गंगा जमुना पर रहने वाले भी रोज़ पतित होते हैं। रोज़ गंगा पर जाकर स्नान करते हैं। एक तो नियम होता है, दूसरे फिर बड़े दिनों पर जाते हैं समझते हैं कि गंगा पतित-पावनी है। ऐसे तो नहीं खास उस एक दिन पर गंगा पावन बनाने वाली बनती है, फिर नहीं रहती। जिस दिन मेला लगता है उस दिन वह पतित-पावनी बन जाती है। नहीं। वह तो है ही है। रोज़ भी जाते हैं स्नान करने। मेले पर भी खास दिन जाते हैं। अर्थ नहीं। गंगा जमुना चीज़ तो वही है। उसमें मुर्दे भी डाल देते हैं।

Point to be Noted

Simple Logic





अभी तुम बच्चों को रूहानी यात्रा पर रहना है। बस अब हम जाते हैं घर। इसमें गंगा स्नान करने वा



Only one time



शास्त्र पढ़ने की कोई बात ही नहीं। बाप आते भी एक ही बार हैं। सारी दुनिया भी पतित से पावन **एक ही बार** बनती है। यह भी जानते हैं सतयुग है नई दुनिया, कलियुग है पुरानी दुनिया। **बाप को आना है जरूर।** नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश करने। यह उनका ही काम है। परन्तु माया ने ऐसा तमोप्रधान बुद्धि बना दिया है जो कुछ भी समझते नहीं। प्रदर्शनी में कितने ढेर बड़े आदमी आते हैं। संन्यासी भी आयेंगे फिर भी समझेंगे कोटों में कोई। तुम लाखों करोड़ों को समझाते हो तब कोई विरला आता है। बहुतों को समझाना होगा। आखरीन **तुम्हारी यह समझानी और चित्र आदि सब अखबारों में भी पड़ेंगे।** सीढ़ी भी अखबार में पड़ेगी। कहेंगे यह तो भारत के लिए ही है और धर्म वाले कहाँ जायेंगे। कयामत का समय भी गाया हुआ है। कयामत अर्थात् वापिस जाने का। पुरानी दुनिया का विनाश नई दुनिया की स्थापना होगी तो जरूर सब वापिस जायेंगे ना। सबका विनाश होना है। नई दुनिया स्थापन हो रही है। **यह बातें कोई नहीं जानते सिवाए तुम बच्चों के।** तुम जानते हो नर्कवासियों का विनाश, स्वर्गवासियों की स्थापना हो रही है। कल्प-

















समझा?

20-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

कल्प ऐसा ही होता है। अभी जो थोड़ा बहुत टाइम है, इसमें भी बहुतों को समझानी मिलती जायेगी। मेले होते रहेंगे। सब तरफ से लिखते रहते हैं हम मेला करें, प्रदर्शनी करें। परन्तु **साथ-साथ अपनी याद की यात्रा भी भूलनी नहीं चाहिए**। बच्चे बिल्कुल ही ठण्डे चल रहे हैं। यात्रा ऐसे करते हैं जैसे बूढ़े। जैसे ताकत ही नहीं, कुछ खाया ही नहीं है। बाबा का कितना ख्याल चलता रहता है। ख्यालात करते-करते नींद ही फिट जाती है। विचार सागर मंथन तो सबको करना चाहिए ना। बच्चे जानते हैं हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। तो बच्चों को कितना अपार खुशी होनी चाहिए। इस पढ़ाई से हम विश्व के मालिक बनते हैं। कोई-कोई की तो चलन ऐसी है - जैसे केकड़े हैं। केकड़ों को बाप देवता बनाते हैं। फिर भी चलन मुश्किल किसकी सुधरती है। इस सीढ़ी के चित्र में बड़ी अच्छी नॉलेज है। परन्तु बच्चे इतना काम नहीं करते। यात्रा ही नहीं करते। बाप को याद करें तो बुद्धि का ताला भी खुलता जाए। गोल्डन बुद्धि बनती जाए। तुम बच्चों की पारसबुद्धि होनी चाहिए, बहुतों का कल्याण करना चाहिए। तुम सतोप्रधान से अब तमोप्रधान बने हो, फिर सतोप्रधान बनना है। बाप

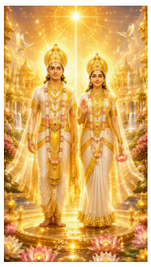




















Points: Golde



तमो प्रधान



सतो प्रधान

Blue= धारणा, Green = सेवा









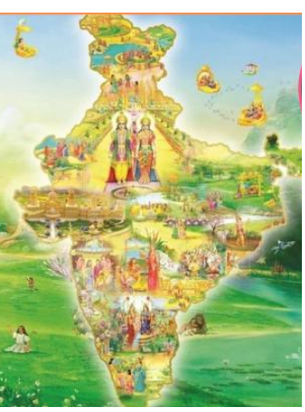
कहते हैं मुझे याद करो। श्रीकृष्ण को कहते हैं श्याम सुन्दर। बाप ने सांवरे (श्याम) की आत्मा को बैठ समझाया है। यह आत्मा जानती है कि बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं तो **खुशी में कितना दिमाग पुर (भरपूर) होना चाहिए**। इसमें घमन्ड की कोई बात नहीं। बाप कितना निरहंकारी है। बुद्धि में कितनी खुशी रहती है। कल हम हीरे जवाहरों के महल बनायेंगे। नई दुनिया में राजधानी चलायेंगे। यह तो बिल्कुल पतित दुनिया है। इस दुनिया के मनुष्य तो कोई काम के नहीं, कुछ नहीं जानते हैं। यह भी दिखाना चाहिए हीरे जैसा जीवन था। वही फिर 84 जन्म ले कौड़ी मिसल बन जाते हैं। यह सीढ़ी का चित्र नम्बरवन है। फिर दूसरे नम्बर में है त्रिमूर्ति।





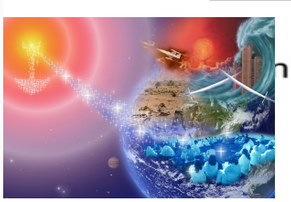


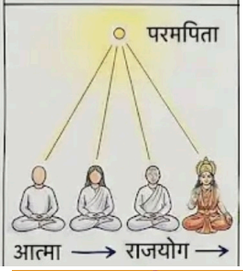


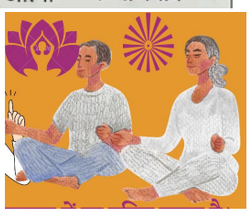


तुम कहते हो - निकट भविष्य में श्रेष्ठाचारी भारत बन जायेगा। श्रेष्ठाचारी दुनिया में बहुत थोड़े मनुष्य होंगे, अभी कितने ढेर मनुष्य हैं। महाभारत लड़ाई भी सामने खड़ी है। सब आत्मायें मच्छरों सदृश्य जायेंगी। आग भड़क रही है। जितना कोशिश करते









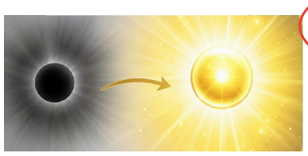
हैं सुधारने की, उतना ही बिगड़ते जाते हैं। बाप बच्चों को राजयोग सिखला रहे हैं। बच्चों को कितना नशा चढ़ाते हैं। कोई-कोई तो यहाँ से बाहर निकले, सारा ज्ञान उड़ जाता है। स्मृति कुछ भी रहती नहीं। नहीं तो शौक हो कि जाकर सर्विस करें। बाप भी गुण देख सर्विस पर भेजेंगे ना। इसमें बड़े हर्षित रहेंगे। सर्विस में खुशी का पारा चढ़ेगा। अच्छे-अच्छे पुराने बच्चे आपस में रूठ पड़ते हैं थोड़ी-थोड़ी बात में। ऐसे थोड़ेही इन बातों के कारण तुमको सर्विस नहीं करनी है। सर्विस तो खुशी से करनी चाहिए। जिसके साथ बनती नहीं है, उसकी शक्ल देखने से ही सर्विस का ख्याल उड़ जाता है। सर्विस में दिल नहीं लगती है तो किनारा कर लेते हैं। फिर तो ज्ञानी और अज्ञानी में कोई फर्क नहीं रहा। देह-अभिमान की ग्रहचारी आकर बैठती है। यह है पहले नम्बर की बीमारी। बाप कहते हैं बच्चे देही अभिमानी बनो। आत्मा ही सब कुछ करती है ना। आत्मा ही विकारी और निर्विकारी बनती है। स्वर्ग में निर्विकारी थी। रावणराज्य में आत्मा ही विकारी बनी है। यह भी ड्रामा ऐसा बना हुआ है इसलिए पुकारते हैं हे पतित-पावन आओ। जो निर्विकारी थे, वही पतित विकारी









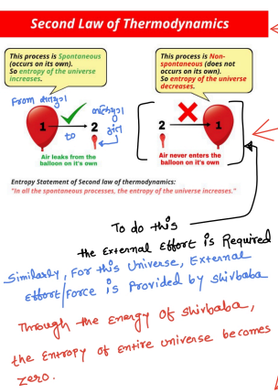




बने हैं। यह किसकी भी बुद्धि में नहीं है कि हम ही निर्विकारी थे, अब विकारी बने हैं। हम आत्मा मूलवतन की रहने वाली हैं। वहाँ तो हम आत्मा निर्विकारी होंगे। यहाँ शरीर में आकर पार्ट बजाते-बजाते विकारी बने हैं। यह बाप बैठ समझाते हैं। आत्मा शान्तिधाम से आती है तो जरूर पवित्र ही होगी फिर अपवित्र बनी है। पवित्र दुनिया में 9 लाख होते हैं। फिर इतनी सब आत्मायें कहाँ से आई? जरूर शान्तिधाम से आई होंगी। **वह है** पीसफुल इनकॉरपोरियल वर्ल्ड। वहाँ सब आत्मायें पवित्र रहती हैं फिर पार्ट बजाते-बजाते, सतो-रजो-तमो में आती हैं। पावन से पतित होना है। फिर बाप आकर सबको पावन बनायेंगे। **यह ड्रामा चलता ही रहता है।**







Exclusive Authority of Shiv baba

ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बाप के सिवाए और कोई बतला न सके। उस बाप को कोई जानते ही नहीं हैं। ऋषि-मुनि भी नेती-नेती कह गये। हम भगवान को और उनकी रचना को नहीं जानते हैं। फिर कहते भी हैं - गॉड फादर इज़ नॉलेजफुल। वह परमात्मा सर्व आत्माओं का बाप, बीजरूप है। वह है आत्माओं का बीजरूप और यह प्रजापिता ब्रह्मा है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। वह निराकार बाप इसमें

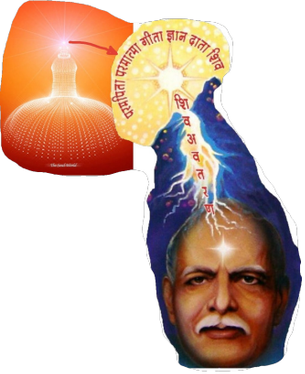


नेती - नेती









प्रवेश कर मनुष्यों को समझाते हैं, मनुष्य द्वारा। शिव बाबा उनको मनुष्य सृष्टि का बीजरूप नहीं कहेंगे। वह है shivbaba आत्माओं का पिता और यह ब्रह्मा है मनुष्य सृष्टि का प्रजापिता, जिस द्वारा बाप आकर ज्ञान देते हैं। शरीर अलग, आत्मा अलग है ना। मन-बुद्धि चित्त आत्मा में है। आत्मा आकर शरीर में प्रवेश करती है, पार्ट बजाने के लिए।

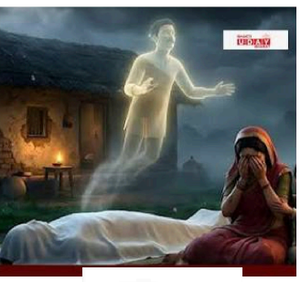




चित्त



तुम जानते हो कोई शरीर छोड़ते हैं तो जाकर दूसरा पार्ट बजायेंगे, इसमें रोने से क्या होगा। गया सो गया फिर थोड़ेही आकर हमारा मामा, चाचा बनेगा। रोने से क्या फायदा। तुम्हारी मम्मा गई, ड्रामा अनुसार पार्ट बजा रही है। ऐसे बहुत जाते हैं। कोई कहाँ जाए जन्म लेते हैं। यह समझ में आता है जैसा-जैसा आज्ञाकारी बच्चा होगा उतना जरूर अच्छे घर में जन्म लिया होगा। यहाँ के जायेंगे ही अच्छे घर में। नम्बरवार तो होते हैं ना। जैसा जो कर्म करते हैं ऐसे घर में जाते हैं। पिछाड़ी में तुम जाकर राजाई घर में जन्म लेते हो। कौन राजाओं के पास जायेंगे, वह







विशाल बुद्धि

खुद समझ सकते हैं ना। फिर भी दैवी संस्कार तो ले जाते हैं ना। इसमें बड़ी विशाल बुद्धि से विचार सागर मंथन करना होता है। बाप ज्ञान का सागर है। तो बच्चों को भी ज्ञान का सागर बनना है। नम्बरवार तो होते ही हैं। समझा जाता है आगे चल उन्नति होती जायेगी। हो सकता है जो आज काम नहीं कर सकते हैं, वह कल बहुतों से तीखे चले जाएं। ग्रहचारी उतर जाए। कोई पर राहू की ग्रहचारी बैठती है तो गटर में गिर पड़ते हैं। हडगुड ही टूट जाते हैं। बेहद के बाप से



प्रतिज्ञा कर फिर गिरते हैं तो धर्मराज द्वारा सजायें भी बहुत मिलती हैं। यह बेहद का बाप, बेहद का धर्मराज है, फिर बेहद की सजा मिलती है। कोई बात



राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।

Refer last pages for "दुआवा"

समझा? Attention Please..!

में आनाकानी करेंगे या उल्टा काम करेंगे तो सजा जरूर खायेंगे। **समझते नहीं कि हम भगवान की अवज्ञा करते हैं**। इतनी सब बातें बाप समझाते रहते हैं। श्रीमत पर चलो, सर्विस में मददगार बनो। योग की यात्रा पर रहो। चित्रों पर समझाने की प्रैक्टिस करेंगे तो आदत पड़ जायेगी। नहीं तो ऊंच पद कैसे मिलेगा। अज्ञानकाल में कोई का बच्चा बड़ा सपूत होता है, कोई तो बड़े कपूत भी होते हैं। यहाँ भी कोई -कोई तो झट बाबा का काम कर दिखाते हैं। तो









20-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन







बच्चों को सर्विस बेहद की करनी है। बेहद की आत्माओं का कल्याण करना है। पैगाम देना है मनमनाभव। बाप को याद करने से तुम्हारी बुद्धि तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेगी। अभी है कलियुगी तमोप्रधान दुनिया की इन्ड। अब सतोप्रधान बनना है। आत्माओं की भी वहाँ नम्बरवार दुनिया है ना, जो फिर नम्बरवार आकर पार्ट बजाते हैं। आयेंगे भी नम्बरवार ड्रामा अनुसार। अभी सब आत्मायें रावण राज्य में दुःखी हैं। सो भी समझते थोड़ेही हैं। अगर किसको कह दो तुम पतित हो तो बिगड़ पड़ेंगे। बाप समझाते हैं यह है ही विशश वर्ल्ड। बाप कहते हैं तुम अपना राज्य-भाग्य ले लेंगे। बाकी सब विनाश हो वापिस चले जाने वाले हैं। यह तो गाया हुआ है महाभारत लड़ाई लगनी है, जिससे सब धर्म खलास हो बाकी एक धर्म रहेगा। यह लड़ाई के बाद स्वर्ग के द्वार खुलते हैं। कितनी अच्छी रीति बच्चों को समझाते हैं। आगे चल तुम्हारी बातें सुनते रहेंगे और आते जायेंगे। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी जो पतित बन गये हैं वही आकर नम्बरवार अपना वर्सा लेंगे। प्रजा तो ढेर बनेंगी। अच्छा !









20-11-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

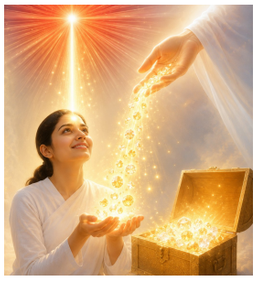




धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) भगवान की आज्ञाओं की अवज्ञा कभी नहीं करनी है। बेहद सेवा में सपूत बच्चा बन मददगार बनना है।





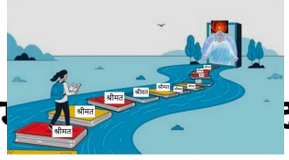
2) ज्ञान धन की गुप्त खुशी से बुद्धि को भरपूर रखना है। आपस में कभी भी रूठना नहीं है।







Method/Process/Instrument



20-11-2026 प्रात:मुरली ओ[illegible]दादा" मधुबन

वरदानः- हर कदम फरमान पर चलकर माया को कुर्बान कराने वाले सहजयोगी भव

Finale Achievement

Outcome/Output/Result





समझा?

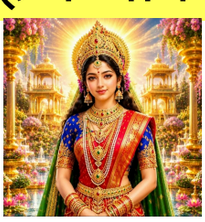
जो बच्चे हर कदम फरमान पर चलते हैं उनके आगे सारी विश्व कुर्बान जाती है, साथ-साथ माया भी अपने वंश सहित कुर्बान हो जाती है।



पहले आप बाप पर कुर्बान हो जाओ तो माया आप पर कुर्बान जायेगी और अपने श्रेष्ठ स्वमान में रहते हुए हर फरमान पर चलते रहो तो जन्म-जन्मान्तर की मुश्किल से छूट जायेंगे।



अभी सहजयोगी और भविष्य में सहज जीवन होगी। तो ऐसी सहज जीवन बनाओ।



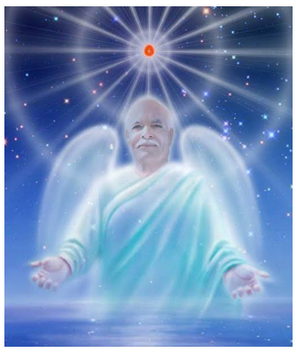
स्लोगनः स्वयं के परिवर्तन से अन्य आत्माओं का परिवर्तन करना ही जीयदान देना है।

Definition of



← Image is only for understanding the concept

= ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा



ये अव्यक्त इशारे -

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो



संकल्प किया और जिस स्थिति में स्थित होना चाहें उसमें स्थित हो जायें, यही है बाप समान सम्पूर्ण अवस्था वा कर्मातीत अन्तिम स्टेज।

जितना सम्पूर्ण अवस्था के नज़दीक होंगे अर्थात् बाप के नजदीक होंगे, उसी अनुसार भविष्य प्रालब्ध में भी राज अधिकारी होंगे।

जितना नशा होगा उतना अपना कर्मातीत अवस्था का निशाना नजदीक दिखाई देगा।

If you wish to stay connected, Here is the link







BKdrluhar

All वरदान slogans Oct 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Oct 26 → Click

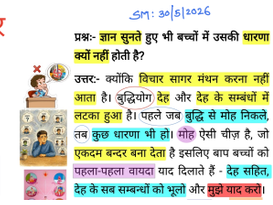
All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अगर आप को Mind Maps के रिलेटेड कोई Feedback या Suggestion भेजना है तो Click

This is Just churning(विचार सागर मंथन)
Kindly grab it as per your divine Intellect

मीठे बाबा की श्रीमत है की "बच्चे विचार सागर मंथन करो"

Click


SM: 30/5/2026
प्रश्नः- ज्ञान सुनते हुए भी बच्चों में उसकी धारणा क्यों नहीं होती है?
उत्तरः- क्योंकि विचार सागर मंथन करना नहीं आता है। बुद्धियोग देह और देह के सम्बंधों में लटका हुआ है। पहले जब बुद्धि से मोह निकले, तब कुछ धारणा भी हो। मोह ऐसी चीज़ है, जो एकदम बन्दर बना देता है इसलिए बाप बच्चों को पहला-पहला वायदा याद दिलाते हैं - देह सहित, देह के सब सम्बन्धों को भूलो और मुझे याद करो।

Just Churning(मन मत)

कालों का काल है बाप। उनकी आज्ञा नहीं मानेंगे तो धर्मराज से डन्डा खायेंगे।
--- साकार मुरली:- 30/1/25



हनुमान का छोटा सा भी मंदिर होगा तो उनके पास लाल डंडा या गदा *जरूर होगी।*
यह यादगार है बापदादा के right hand *धर्मराज* का..

इसीलिए हनुमान चालीसा में कहा है कि
राम दुआरे तुम रखवारे(राम द्वार = सूक्ष्म वतन धर्मराजपुरी बन जाएगी)
होत न आज्ञा बिनु पैसारे... (हनुमान/ धर्मराज के द्वारा सजाओ के बल से जब तक आत्मा पावन नही बनती तब तक उनको परमधाम में प्रवेश होने की permission नहीं है except अष्ट रत्न)

(उसका यादगार: majority गांव में आज भी हनुमान मंदिर देखेंगे तो वो गांव के बाहर/गांव के दरवाजे पर/entrance के आसपास होगा... इसका मतलब है कि हनुमान/धर्मराज परमधाम के बाहर यानी सूक्ष्मवतन पे खड़ा है।)

"बाप को धर्मराज का साथ लेना पसन्द नहीं है। कर क्या नहीं सकता है! एक सेकेण्ड में किसी को भी अन्दर ही अन्दर सज़ा दे सकते हैं और वो सेकेण्ड की सज़ा बहुत-बहुत तेज़ होती है। लेकिन बापदादा नहीं चाहते।

बाप का रूप प्यारा है, धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।"

AV: 25/11/95

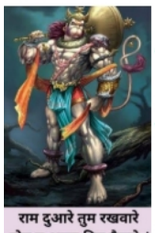
Attention Please...!

जो बाबा, साकार मुरली में कहते है की पिछाड़ी में कायदे बहुत कड़े हो जाएंगे। वो इसी संदर्भ में बाबा कहते होंगे।

Example :→ दिन-प्रतिदिन बहुत कड़े कायदे होते जायेंगे।
SM: 31/12/2025

Sakar Murli date :- 8/6/2023

से पूछो कि क्राइस्ट याद आता है या गॉड फादर? जानते हो कि पाप करेंगे तो दण्ड भोगना पड़ेगा। परन्तु बाप दण्ड कभी नहीं देता। वह करनकरावनहार है। धर्मराज द्वारा सजा दिलाते हैं। गॉड तो मोस्ट बील्वेड बाप है। वह झूठे कलंक लगाते हैं कि बाप ही सुख-दु:ख देते हैं। तो क्या बेरहम हैं? गाते भी हैं मर्सीफुल। बाप कहते हैं मैं कैसे बेरहमी करुँगा। माया ने तुम्हारे पर बेरहमी की है। मैं तो उनसे छुड़ाता हूँ। माया



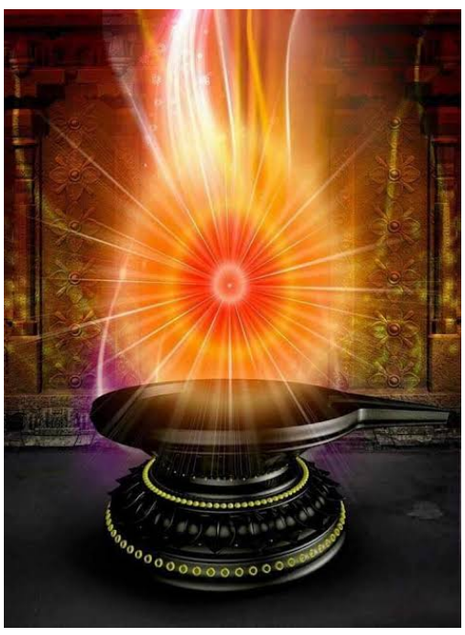
Note down!

Avyakt Murli : 15/11/2003

ब्रह्मा बाप को फॉलो करो। अपवित्रता का नाम निशान नहीं, ब्राह्मण जीवन माना यह है। माताओं में भी मोह है तो अपवित्रता है। मातायें भी ब्राह्मण हैं ना। तो ना माताओं में, ना कुमारियों में, ना कुमारों में, न अधर कुमार कुमारियों में। ब्राह्मण माना ही है पवित्र आत्मा। अपवित्रता का अगर कोई कार्य होता भी है तो यह बड़ा पाप है। इस पाप की सजा बहुत कड़ी है। ऐसे नहीं समझना यह तो चलता ही है। थोड़ा बहुत तो चलेगा ही, नहीं। यह फर्स्ट सबजेक्ट है। नवीनता ही पवित्रता की है। ब्रह्मा बाप ने अगर गालियां खाई तो पवित्रता के कारण। हो गया, ऐसे छूटेंगे नहीं। अलबेले नहीं बनो इसमें। कोई भी ब्राह्मण चाहे सरेण्डर है, चाहे सेवाधारी है, चाहे प्रवृत्ति वाला है, इस बात में धर्मराज भी नहीं छोड़ेगा, ब्रह्मा बाप भी धर्मराज को साथ देगा। इसलिए कुमार कुमारियां कहाँ भी हो, मधुबन में हो, सेन्टर पर हो लेकिन इसकी चोट, संकल्प मात्र की चोट बहुत बड़ी चोट है। गीत गाते हो ना - पवित्र मन रखो, पवित्र तन रखो.. गीत है ना आपका। तो मन पवित्र है तो जीवन पवित्र है इसमें हल्के नहीं होना, थोड़ा कर लिया क्या है! थोड़ा नहीं है, बहुत है। बापदादा आफीशियल इशारा दे रहा है, इसमें नहीं बच सकेंगे। इसका हिसाब-किताब अच्छी तरह से लेंगे, कोई भी हो। इसलिए सावधान, अटेन्शन। सुना - सभी ने ध्यान से। दोनों कान खोल के सुनना। वृत्ति में भी टचिंग नहीं हो। दृष्टि में भी टचिंग नहीं। संकल्प में नहीं तो वृत्ति दृष्टि क्या है! क्योंकि समय सम्पन्नता का समीप आ रहा है, बिल्कुल प्युअर बनने का। उसमें यह चीज़ तो पूरा ही सफेद कागज पर काला दाग है।

Dadi Jankiji says : → Click

शिवबाबा



हनुमान = **धर्मराज** = दीदी



ब्रह्माबाबा



It is not from authentic source but placed here for building connection.

• शंकर क्या करते हैं? उनका (विषयवी) पार्ट ऐसा
युगलकुमार हैंजी तुम विश्वास कर न सकोगे ★★★
(मु.14.5.70 पृ.2 आदि)



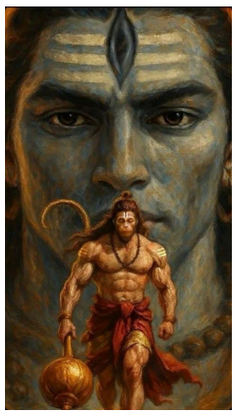
बाप का रूप प्यारा है,
धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।
AV: 25/11/95

बाप का जो गायन है कि वह सर्जन भी है, इंजीनियर भी है, वकील भी है, जज भी है - इसका प्रैक्टिकल सब अनुभव करेंगे, तब सब तरफ से बुद्धि हटकर एक तरफ जायेगी।
AV: 2/11/87

महावीर का दिखाते हैं न कि वह सारी पहाड़ी की पहाड़ी को ले आया।
AV: 28/12/79

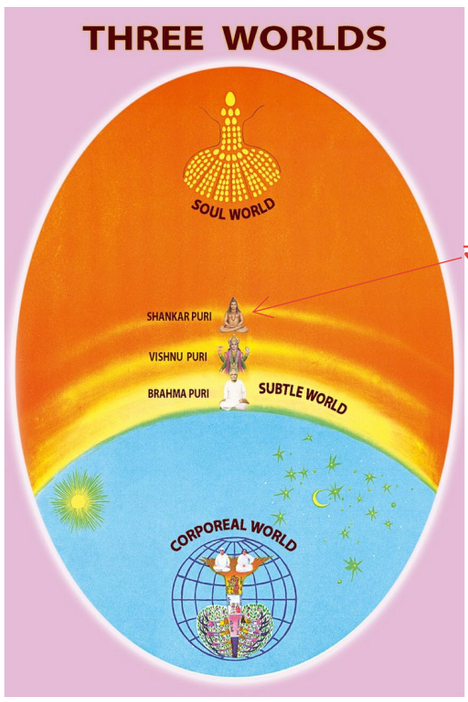


Mind very well... ★★★ शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है लेकिन शक्तियाँ ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है। शक्तियों को संहारी रूप धारण करना है, जिससे संहार करना है। AV: 9/10/71



शंकर स्वयं केसरी नंदन

Reference ⇒ Click



राम दुआरे तुम रखवारे

Secret Revealed

बच्चों ने पूछा कि एक ही समय इकट्ठा मृत्यु कैसे और क्यों होता? इसका कारण है। यह तो जानते हो और अनुभव करते हो कि अब सम्पन्न होने का समय समीप आ रहा है। सभी आत्माओं का, द्वापरयुग वा कलियुग से किए हुए विकर्मों वा पापों का खाता जो भी रहा हुआ है वह अभी पूरा ही समाप्त होना है। क्योंकि सभी को अब वापस घर जाना है। द्वापर से किये हुए कर्म वा विकर्म दोनों का फल अगर एक जन्म में समाप्त नहीं होता तो दूसरे जन्मों में भी चूक्तू का वा प्राप्ति का हिसाब चलता आता है। लेकिन अभी लास्ट समय है और पापों का हिसाब ज्यादा है। इसलिए अब जल्दी-जल्दी जन्म और मृत्यु - इस सजा द्वारा अनेक आत्माओं का पुराना खाता खत्म हो रहा है। तो वर्तमान समय मृत्यु भी दर्दनाक और जन्म भी मैजारिटी का बहुत दुःख से हो रहा है। न सहज मृत्यु न सहज जन्म है। तो दर्दनाक मृत्यु और दुःखमय जन्म यह जल्दी हिसाब किताब चूक्तू करने का साधन है। जैसे इस पुरानी दुनिया में चींटियाँ, चीटें, मच्छर आदि को मारने के लिए साधन अपनाये हुए हैं। उन साधनों द्वारा एक ही साथ नीटियाँ वा मच्छर वा अनेक प्रकार के कीटाणु इकटठे ही विनाश हो जाते हैं ना। ऐसे आज के समय मानव भी मच्छरों, चीटियों सदृश्य अकाले मृत्यु के वश हो रहे हैं। मानव और चीटियों में अंतर ही नहीं रहा है। यह सब हिसाब-किताब और सदा के लिए समाप्त होने के कारण इकट्ठा अकाले मृत्यु का तूफान समय प्रति समय आ रहा है।

वैसे धर्मराज पुरी में भी सजाओं का पार्ट अंत में नूँधा हुआ है। लेकिन वह सजायें सिर्फ आत्मा अपने आप भोगती और हिसाब-किताब चूक्तू करती है। लेकिन कर्मों के हिसाब अनेक प्रकार में भी विशेष तीन प्रकार के हैं। एक है आत्मा को अपने आप भोगने वाले हिसाब। जैसे - बिमारियाँ। अपने आप ही आत्मा तन

Point to be Noted

Point to be Noted

Example

धर्मराज

के रोग द्वारा हिसाब चूक्तू करती है। ऐसे और भी दिमाग कमजोर होना वा किसी भी प्रकार की भूत प्रवेशता। ऐसे-ऐसे प्रकार की सजाओं द्वारा आत्मा स्वयं हिसाब-किताब भोगती है। दूसरा हिसाब है - सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा दुःख की प्राप्ति। यह तो समझ सकते हो ना, कि कैसे है। और तीसरा है - प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चूक्तू होना। तीनों प्रकार के आधार से हिसाब-किताब चूक्तू हो रहे हैं। तो धर्मराजपुरी में सम्बन्ध और सम्पर्क द्वारा हिसाब वा प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चूक्तू नहीं होगा। वह यहाँ साकार सृष्टि में होगा। सारे पुराने खाते सभी के खत्म होने ही है। इसलिए यह हिसाब-किताब चूक्तू की मशीनरी अब तीव्रगति से चलनी ही है। विश्व में यह सब होना ही है, समझा। यह है कर्मों की गति का हिसाब-किताब। अब अपने आप को चेक करो - कि मुझ ब्राह्मण आत्मा का तीव्रगति के तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सब पुराने हिसाब-किताब चूक्तू हुए है वा अभी भी कुछ बोझ रहा हुआ है? पुराना खाता भी कुछ रहा हुआ है वा समाप्त हो गया है? इसकी विशेष निशानी जानते हो? श्रेष्ठ परिवर्तन में वा श्रेष्ठ कर्म करने में कोई भी अपना स्वभाव-संस्कार विघ्न डालता है वा जितना चाहते है, जितना सोचते है उतना नहीं कर पाते है और यही बोल निकलते वा संकल्प मन में चलते कि न चाहते भी पता नहीं क्यों हो जाता है। पता नहीं क्यों हो जाता है? वा स्वयं की चाहना श्रेष्ठ होते, हिम्मत उल्लास होते भी परवश अनुभव करते है, कहते है ऐसा करना तो नहीं था, सोचा नहीं था लेकिन हो गया। इसको कहा जाता है स्वयं के पुराने स्वभाव संस्कार के परवश। यह तीनों प्रकार के परवश स्थितियाँ होती है तो न चाहते हुए होना, सोचते हुए न होना वा परवश बन सफलता को प्राप्त न करना - यह निशानी पिछले पुराने खाते के बोझ की। इन निशानियों द्वारा अपने आपको चेक करो - किसी भी प्रकार का बोझ उड़ती कला के अनुभव से नीचे तो नहीं ले आता। हिसाब चूक्तू अर्थात् हर प्राप्ति के अनुभवों में उड़ती कला। कब-कब प्राप्ति है। कब है तो अब रहा हुआ है। तो इसी विधि से अपने आपको चेक करो। दुःखमय दुनिया में तो दुःख की घटनाओं के पहाड़ फटने ही हैं। ऐसे समय पर

Attention..!

धर्मराज

सेफ्टी का साधन है ही 'एक बाप की छत्रछाया'। छत्रछाया तो है ही ना!

(10.12.1984)





राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।

10/3/26

है। वह खुशी व नशा नहीं रहता है। फिर बड़े विकर्म भी उनसे होते हैं, जिस कारण बड़े दण्ड के भागी बन पड़ते हैं। देह-अभिमानी बनने से बहुत नुकसान पाते हैं। बहुत सजा खानी पड़ती है। बाप कहते हैं यह गॉडली वर्ल्ड गवर्मेन्ट है ना। मुझ गॉड की गवर्मेन्ट का राइट हैण्ड है धर्मराज। तुम अच्छे कर्म करते हो तो उनका फल अच्छा मिलता है। बुरे कर्म करते हो तो उनकी सजा खाते हो। सब गर्भ जेल में भी सजायें खाते हैं। उस पर भी एक

23/4/2026



Coming soon...

very

For more... Refer Last Pages



राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।

हैं। ऐसे कर्म करने वाले बहुत नाज़ुक होते जायेंगे। आगे चल नहीं सकेंगे। पिछाड़ी के नाज़ुक समय कोई कुछ करता है तो एकदम मार्शल लॉ चलाते हैं। आगे चल तुम बहुत देखेंगे। बाबा क्या-क्या करते हैं। बाबा थोड़ेही सज़ा देंगे, धर्मराज द्वारा दिलवाते हैं। ज्ञान में प्रेरणा की बात नहीं है। भगवान को तो सब मनुष्य कहते हैं हे पतित-पावन आओ हमको आकर पावन बनाओ। सभी



जैसे आप लोगों ने देखा होगा कि कभी-कभी छोटे बच्चे जब कोई चीज के पीछे लग जाते हैं तो वह चीज भल अच्छी भी होती है लेकिन हद से ज्यादा उस अच्छी चीज के पीछे पड़ जाते हैं तो बच्चों से क्या किया जाता है? वह चीज उनकी आँखों से छिपाकर यह कहा जाता है कि है ही नहीं। इसलिए ही कहा जाता है कि इसकी जो एकस्ट्रा लगन लग गई है, वह कुछ ठीक हो जाए। AV 2/2/69

शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है लेकिन शक्तियाँ ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है। शक्तियों को संहारी रूप धारण करना है, जिससे संहार करना है। AV: 9/10/71

बाप का जो गायन है कि वह सर्जन भी है, इंजीनियर भी है, वकील भी है, जज भी है - इसका प्रैक्टिकल सब अनुभव करेंगे, तब सब तरफ से बुद्धि हटकर एक तरफ जायेगी। अभी तो आपके पीछे भीड़ लगने वाली है। बापदादा तो यह दृश्य देखते हैं और कभी-कभी अब के दृश्य देखते हैं - बहुत फर्क लगता है। आप हो कौन, वह बाप जानता है! बहुत-बहुत वण्डरफुल पार्ट होने हैं, जो ख्याल- ख्वाब में भी नहीं हैं। सिर्फ थोड़ा रूका हुआ है, बस। जैसे पर्दा कभी-कभी थोड़ा अटक जाता है ना। झण्डा भी लहराते हो तो कभी अटक जाता है। ऐसे अभी थोड़ा-थोड़ा अटक रहा है। आप जो है, जैसे हो - बहुत महान हो। जब आपकी विशेषता प्रत्यक्ष होगी तब तो इष्ट बनेंगे। आखिर तो भक्त माला भी प्रत्यक्ष होगी ना। लेकिन पहले ठाकुर सजकर तैयार हों तब तो भक्त आयें ना। अच्छा।

AV: 2/11/87

"बाप को धर्मराज का साथ लेना पसन्द नहीं है। कर क्या नहीं सकता है! एक सेकेण्ड में किसी को भी अन्दर ही अन्दर सज़ा दे सकते हैं और वो सेकेण्ड की सज़ा बहुत-बहुत तेज़ होती है। लेकिन बापदादा नहीं चाहते।

बाप का रूप प्यारा है, धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।"
AV: 25/11/95

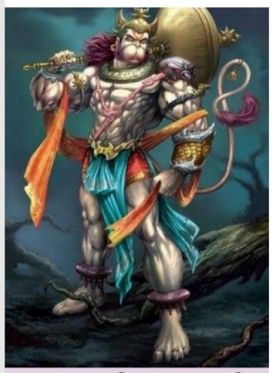
जायेगा। न बताने से वह वृद्धि होती जायेगी।

Attention..!

जास्ती फँसते जायेंगे। फिर तकदीर खत्म हो, बदकिस्मती आ जायेगी। बाप कहते हैं - देह से भी

समझा?

सम्बन्ध न रखो, हमेशा मामेकम् याद करते रहो फिर कोई गंदा काम नहीं होगा। यह धर्मराज भी है,



राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसारे |

उनसे भी छिपाते रहेंगे तो फिर तुम्हारे जैसी सजा कोई को नहीं मिलेगी। जितना समय नजदीक होगा सबको साक्षात्कार होता जायेगा। अभी सबकी कयामत का समय है, सब पतित हैं। पापों

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Coming soon...

Are you ready?

29-05-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

का दण्ड जरूर मिलता है। जैसे एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है वैसे एक सेकेण्ड में सजाओं

Point to be Noted

की भासना ऐसे आती है जैसे बहुत समय से सजायें खाता ही रहता हूँ। यह बड़ी सूक्ष्म मशीनरी





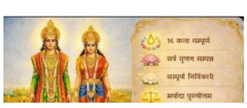
है। सबके कयामत का समय है। सज़ा भोगनी तो है जरूर। फिर सब आत्मायें पवित्र होकर जाती हैं।

Words of world Almighty Authority

बाप ही आकर पतित आत्माओं को पावन बनाते हैं। बाप के सिवाए और कोई की ताकत नहीं। 63



जन्म पाप करते-करते अभी तुम्हारे पापों का घड़ा आकर भरा है। माया का ग्रहण सबको लगा हुआ



है। बड़ा ग्रहण तुम पर लगा है। सर्वगुण सम्पन्न तुम